समाजदर्शी शोध पत्रिका

ISSN No. 2395 - 0374

अप्रैल 2015 से जून 2015 (अंक - 2)

अभिव्यक्ति के बदलते परिप्रेक्ष्य में छायावाद का स्वरूप

डॉ. जीत सिंह

सहायक प्रोफेसर हिन्दी

कु. मायावती राज. महिला महाविद्यालय

बादलपुर (गौ.बुद्धनगर)

शोध सारांश

युग परिवर्तन के साथ-साथ कवियों की लेखनी का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ। उन्नसवीं शताब्दी में मानव-जीवन अंधकार से एकदम प्रकाश में आ गया। मानव जीवन और प्रकृति के जो अर्थ मध्ययुग में लिये जाते थे, उससे भिन्न अर्थ आधुनिक युग में लिये जाने लगे। बुद्धिवाद और विज्ञान के विकास द्वारा मानव-चेतना का एकदम नए ढंग से पुनर्निर्माण हुआ। यह भारत का कायाल्प है जिसे नवजागरण कहा गया है। इस समय ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज, सांस्कृतिक आन्दोलनों ने कवियों को झकझोर दिया और वे जनसाधारण की समस्याओं के प्रति उन्मुख हुए। वीर, भक्ति और श्रृंगार का स्थान राष्ट्रीयता, सामाजिक प्रबुद्धता, सांस्कृतिक चेतना और आत्माभिव्यक्ति ने ले लिया।

भाषा के तीन रूप हैं- लिखित, मौखिक एवं सांकेतिक। अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाने एवं दूसरों के विचार अपने पास आने की दो विद्याएँ हैं- गद्यात्मक विधा एवं पद्यात्मक विधा।

गद्य विधा के कई पक्ष परिलक्षित होते हैं कहानी, नाटक, उपन्यास, रिपोर्ताज, डायरी, जीवनी, आत्मकथा आदि गद्यात्मक की ये सभी शैलियाँ सशक्त शैलियाँ रही हैं। काव्य के भी दो पक्ष होते हैं - विषय पक्ष जिसे भाव पक्ष भी कहते हैं और शिल्प या अभिव्यंजना पक्ष, जिसे कला पक्ष भी कहते हैं। विषय पक्ष अर्थात भावपक्ष काव्य की अंतरंगता से सम्बन्ध रखता है। कला या शिल्प पक्ष अभिव्यक्ति का बहिरंग पक्ष है। श्रेष्ठ और मौलिक काव्य वही है जिसमें दोनों पक्षों का सुन्दर समन्वय और संगम हो।

अभिव्यक्ति के बदलते हुए परिप्रेक्ष्य के कारण यदि एक ओर आलोव्य-काव्य की विषय वस्तु में परिवर्तन हुआ तो दूसरी ओर अभिव्यक्ति भी उससे अछूती नहीं रही। वस्तु पक्ष में परिवर्तन के साथ अभिव्यक्ति-पक्ष में अपने आप परिवर्तन हो गया- क्योंकि अभिव्यक्ति भावों की सशक्त